योगसारसंग्रह में समागत विषयों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अशोक कुमार

योगसारसंग्रहकार विज्ञानभिक्षु ने योगदर्शन के गूढ़ विषयों की गहनता को ध्यान में रखते हुए एवं इस दर्शन के विषय को उपादेय बनाने के लिए योगसारसंग्रह नामक ग्रन्थ की रचना की। उनके मतानुसार योग में अमृतरूपी सार को उन्होंने इस ग्रन्थरुपी घट में पर्याप्त मन्थन के बाद प्रस्तुत किया है। अमृतसार प्राप्ति की प्रक्रिया में योगवार्तिक को अचलदण्ड के रूप में तथा योग के विस्तृत वाङ्मय को सागर रूप में स्वीकार किया है। योगविषयक मन्तव्य को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया है। विज्ञानभिक्षु का 'योगसारसंग्रह' ग्रन्थ पतंजलि रचित योगसूत्र एवं उस पर लिखे व्यासभाष्य की टीका योगवार्तिक में जिन धारणाओं को सूत्र की व्याख्या करते हुए दिया गया है उन्हीं का सार प्रस्तुत करना है। विज्ञानभिक्षु का 'योगसारसंग्रह' ग्रन्थ पतंजलि रचित योगसूत्र एवं उस पर लिखे व्यासभाष्य की टीका योगवार्तिक में जिन धारणाओं को सूत्र की व्याख्या करते हुए दिया गया है। उन्हीं का सार प्रस्तुत करता है। यह चार अंशों में विभाजित है। प्रथम अंश में योगस्वरूप एवं उसके प्रयोजन द्वितीय अंश में योगसाधनों, तृतीय अंश में योगसिद्धिनिरूपण व अन्तिम चतुर्थ अंश में कैवल्यादि का निरूपण किया गया है।